अवाम में मशहूर गैर मोअ'तबर रिवायात

ناقل ۔ محمد مونس نقشبندی

الحمد لله رب العالمين و الصلوة والسلام على سيد الانبياء والمرسلين... اما بعد !

अवाम में मशहूर ग़ैर मोअतबर रिवायात

1. हुज़ूर अक़्दस ﷺ से पूछा गया कि कौन सा घर सबसे अफ़ज़ल है ? तो हुज़ूर अक़्दस ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि "वो घर जिसमें में मौजूद हूँ।" फिर पूछा गया कि इस के बाद कौन सा घर अफ़ज़ल है? तो हुज़ूर अक़्दस ﷺ ने फ़रमाया कि "फिर वो घर अफ़ज़ल है जिसमें से कोई शख़्स अल्लाह तआला के रास्ते में निकले।"

इस रिवायत का कोई सुबूत नहीं मिलता, बल्कि ये मंघड़त है.

(ایک سو پچاس روایات کی تحقیق)

2. बतौर हदीस मशहूर है - क़यामत मे एक क़ब्र से सत्तर (70) मुर्दे उठेंगे , ये रिवायत सनदन नहीं मिलती , इसलिए बयान करना मौक़ूफ रखा जाये ।

(مختصر : غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ حصہ سوم)

3. मशहूर है अल्लाह के रास्ते में निकलने वालों की दुआएँ बनी इसराइल के अम्बिया ए किराम की तरह क़ुबूल होती हैं ! ये बात हदीस से साबित नहीं है ।

(پچاس غیر ثابت روایات صفحہ ۱۰)

4 - बतौर हदीस मशहूर है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अली ! (रज़ि.) तेरे कहने सुनने से एक शख्स भी राह ए रास्त पर आ जाये , तो ये तेरी नजात के लिए काफी है ।

इस रिवायत की सनद नहीं मिलती , इसलिए इसको बयान ना किया जाये ।

(غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ)

इसकी जगह बुखारी शरीफ की रिवायत बयान किया जाये जिसमें है की :- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: - अल्लाह की क़सम अगर तुम्हारे ज़रिये एक भी शख्स को हिदायत मिल

जाये तो ये तुम्हारे लिए सुर्ख ऊँटों से बेहतर है । (सहीह बुखारी)

5 -बतौर हदीस मशहूर है अल्लाह जिस को 70 मर्तबा मुहब्बत की निगाह से देखता है उसे अपने रास्ते के लिए क़ुबूल कर लेता है ,क़ुबूलियत यक़ीनत नज़र ए रहमत का एक हिस्सा है लेकिन ऐसी कोई हदीस आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सनदन नहीं मिल सकी !

(غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ)

6 -मशहूर है हज़रत बिलाल रज़ि. ने अज़ान नहीं दी तो सुबह नहीं हो रही थी ,जब अज़ान दी तो सुबह हुई !

इस बात की कोई असल नहीं

(غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ)

7-बतौर हदीस मशहूर है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया :- अगर झुक जाने और आजिज़ी इख्तियार करने से किसी की इज़्ज़त मे कमी आये तो कल क़यामत मे मुझ से ले लेना ।

इन अल्फाज़ मे कोई हदीस सनदन नहीं मिलती ,

अलबत्ता एक हदीस में है जो अल्लाह के लिए झुकता या तवाज़ो इख्तियार करता है अल्लाह उसे बुलन्द कर देता है ।

(सहीह मुस्लिम)

(روایات کا تحقیقی جائزہ ۱۵۰)

8 -मशहूर रिवायत है :-

"ما من نبی نُبِّیء الا بعد الا ربعین"

हर नबी को नुबुव्वत चालीस साल (की उम्र) बाद मिली है ।

हुक्म :- ये रिवायत मनघड़त है ।

हाफ़िज़ इब्न ए जौज़ी रह. की तसरीह (सराहत) के मुताबिक़ ये रिवायत मनघड़त है ।

और उनके कलाम पर अल्लामा सुयूती रह. ,मुल्ला अली क़ारी रह. ,और कई बड़े उलमा ने ऐतमाद किया है ।

(مختصر غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ)

9 -रिवायत मशहूर है रोज़ ए महशर अल्लाह तआला का इरशाद होगा कौन है जो हिसाब दे ?हज़रत अबू बकर रज़ि. के सामने आने अल्लाह का गुस्सा ठंडा हो जायेगा ,ये रिवायत सनदन नहीं मिलती ,इसलिए बयान करने से बचा जाय ।

(غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ حصہ سوم)

10-बतौर हदीस मशहूर है :- जो शख्स अल्लाह तआला के रास्ते में निकलता है तो अल्लाह उसके घर की हिफाज़त के लिए पाँच सौ फरिश्ते मुक़र्रर फरमा देता है ।

इस रिवायत की कोई सनद नहीं है ।

(روایات کی تحقیق.١٥٠)

11 -मशहूर है " एक औरत नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास दूध पीता बच्चा लेकर आयी और कहा कि इसे आप अपने साथ जिहाद में ले जाएँ ,लोगों ने उस से कहा - ये बच्चा जिहाद में क्या करेगा ?

उस औरत ने कहा ,कुछ ना हो तो उसे अपने लिए ढाल बना लेना ।

ये रिवायत बगैर सनद है ,इसलिए बयान करना मौक़ूफ रखा जाये ।

(غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ. حصہ دوم)

12-बतौर हदीस बयान किया जाता है :- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने से एक यहूदी का जनाज़ा गुज़रा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों से आंसू आ गये ,सहाबा ए किराम रज़ि. ने ये तो मुसलमान का जनाज़ा नहीं बल्कि काफ़िर का

है इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :- मेरी उम्मत मे से तो है जो जन्नत की बजाये जहन्नम में जायेगा ।

ये रिवायत बगैर सनद है ,बयान करना मौक़ूफ रखा जाये ।

(غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ. حصہ دوم)

13 -एक वाक्या मशहूर है जिसमे हज़रत अबू बकर रज़ि. ने अपना सारा माल सदक़ा कर दिया ,और खुद टाट का लिबास पहन लिया ,इस पर हज़रत जिबरील अलै. आये और कहा अल्लाह तआला हज़रत अबू बकर रज़ि. को सलाम करता है और पूछता है क्या वो मुझसे इस हाल मे राज़ी हैं? इस पर हज़रत अबू बकर रज़ि. कहते हैं मै राज़ी हूँ ,और हज़रत अबू बकर रज़ि का टाट का लिबास देखकर फरिश्ते भी टाट का लिबास पहन लेते हैं ।जहाँ तक तमाम माल सदक़ा करने की बात है तो ये दुरुस्त है जो हज़रत अबू बकर रज़ि ने गज़वा ए तबूक के मौके पर अपना सारा माल खर्च किया था ,इस वाक़्ये को हाफिज़ इब्न ए हजर,इब्न ए जरीर और इब्न ए आसिम रह. ने नक़ल किया है ,लेकिन टाट का

लिबास और अल्लाह की तरफ से सलाम और दीगर बातें मौज़ू (गढ़ी हुई) हैं ।

जिसको बयान करना जाइज़ नहीं है ।

(کتاب النوازل و غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ)

14 -बतौर हदीस मशहूर है :-

इल्म हासिल करो चाहे चीन जाना पड़े ,और इल्म हासिल करो माँ की गोद से क़ब्र तक

ये दोनों रिवायतें मनघड़त हैं । इसलिए इन्हे हदीस कहकर ना बयान करना चाहिए ।

(غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ)

15-हदीस ए क़ुदसी के तौर पर मशहूर है :-

كنت كنزاً مخفياً......

अल्लाह ने फ़रमाया मैं एक छिपा हुआ खज़ाना था , मैं ने चाहा कि मैं पहचाना जाऊँ (तो अपनी पहचान कराने के लिए) मैंने मखलूक़ को पैदा किया (जब मखलूक़ को पैदा किया) तो उन्होंने मुझे पहचान लिया ।

हुक्म :- हदीस ए क़ुदसी के तौर पर ये बयान करने से बचा जाये । क्यूंकि इसकी सनद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित नहीं है ।

शेखुल इस्लाम इब्न ए तैमिया रह. और अल्लामा सुयूती रह. के नज़दीक़ ये मनघड़त रिवायत है ।

(غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ)

नोट :- अलबत्ता क़ुरआन ए करीम की सूरह ज़ारियात की आयत -

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُون

में अल्लामा मुजाहिद रह. ने لِيَعْبُدُون की तफसीर لِيَعرِفُوني की है -

यानी अल्लाह ने इंसान और जिन्नात को अपनी मारिफ़त के लिए पैदा किया ।

(تفسیر ابن کثیر، جلد7 ، صفحہ 425)

محمد مونـــس ✍️

16-बतौर हदीस मशहूर है :- जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेराज की रात आसमानों के ऊपर तशरीफ़ ले गये तो अल्लाह तआला ने पूछा ऐ मेरे

महबूब मेरे लिए तोहफ़े में क्या लाये हो ?तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब दिया मैं ऐसा तोहफा लाया हूँ जो आप के पास नहीं है ,तो अल्लाह तआला ने पूछा ऐसा कौन सा तोहफा लाये हो जो मेरे पास नहीं है ?आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैं आजिज़ी ले कर आया हूँ ।

इस रिवायत की कोई सनद नहीं है इसलिए बयान ना किया जाये ।

(پچاس غیر ثابت روایات صفحہ : ۱۰)

17 -एक औरत का आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कूड़ा फेंकने वाले वाक्ये की हकीकत !

बतौर हदीस मशहूर है :- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर एक औरत कूड़ा फेंकती थी। एक दिन उसने कूड़ा ना फेंका तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस के घर चले गए उस के घर को साफ़ किया। पानी भरा तो वो औरत आपका अख़लाक़ देखकर मुस्लमान हो गई ,

हुक्म :- ऐसी कोई हदीस कुतुब ए अहदीस में मौजूद नहीं है ,ये रिवायत मनघड़त है ,इसलिए इसे बयान ना किया जाये और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अख़लाक़ बयान करने के लिए सहीह और मुस्तनद रिवायात को बयान किया जाये जिसका ज़खीरा मौजूद है ।

(ایک سو پچاس روایات کی تحقیق)

18 -बतौर हदीस एक तवील रिवायत मशहूर है जिसमे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ि. से फरमाया ऐ अली ! सोने से पहले पांच आमाल करके सोया करो ,

1-चार हज़ार दीनार सदक़ा देके सोया करो ,2-एक कुरआन शरीफ़ पढ़ कर सोया करो ,3-जन्नत की क़ीमत देकर सोया करो ,4-दो लड़ने वालों में सुलह कराकर सोया करो 5-एक हज कर के सोया करो !

फिर पांच अज़कार की तालीम देते हैं । जिसका सवाब इन पांच आमाल के जितना बताते हैं ।

(غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ)

ये रिवायत मौज़ूअ (मनघड़त) है ,इसको बयान ना किया जाये ।

19-बतौर हदीस मशहूर है :-

سور المؤمن شفاء

"मोमिन के झूटे मे शिफ़ा है ।

या

ريق المؤمن شفاء

मोमिन के थूक में शिफ़ा है ।

दोनों क़िस्म के अल्फाज़ आप सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित नहीं हैं ,इसलिए बयान नहीं कर सकते ।

(مختصر غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ. صفحہ ۶۲)

20 -मशहूर है हालत ए सकरात (रूह मुबारक निकलने के वक़्त) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत जीब्रील अलैहिस्सलाम से फरमाया की ऐ जीब्रील अगर मौत के वक़्त (रूह निकलने) की तकलीफ) इतनी है तो सारी उम्मत के सकरात (मौत की सख्ती) की तकलीफ़ मुझे दे दो ,ताक़ी मेरी उम्मत को तकलीफ़ ना हो ।

ये रिवायत सनदन नहीं मिलती ,इसलिए बयान ना किया जाये ।

(غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ)

21-बतौर हदीस मशहूर है - " एक औरत अपने साथ चार लोगों को जहन्नम में लेकर जायेगी ,बाप , भाई ,शौहर ,बेटा ।

ये रिवायत सनदन नहीं मिलती ,इसलिए बयान ना किया जाये ।

(غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ)

22-मशहूर है हज़रत बिलाल रज़ि. आप सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊँटनी की नकेल पकड़कर जन्नत में दाखिल होंगे ।

ये रिवायत सनदन नहीं मिलती ,इसलिये बयान ना किया जाये ।

(غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ)

23 -बतौर हदीस मशहूर है कि : -

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया " मुझे मौत के आने का इतना भी भरोसा नहीं एक तरफ़

सलाम फेरूं तो दूसरी तरफ़ भी सलाम फेर सकूंगा या नहीं ।

ये रिवायत बगैर सनद है ,इसलिए बयान ना किया जाये ।

(غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ)

24-बतौर हदीस मशहूर है :- अगर मैं अपने वालिदैन या उनमे से किसी एक को इस हालत में पाऊँ कि मैं इशा की नमाज़ में मशगूल होऊँ और सूरह फ़ातिहा चुका होऊँ ,इसी दौरान मेरी वालिदा मुझे पुकार कर कहें ! ऐ (बेटे) मुहम्मद ! तो मैं जवाब में अपनी वालिदा से कहूँगा ! लब्बैक (मैं हाज़िर हूँ) !

हुक्म :- शदीद ज़ईफ़ ,बयान नहीं कर सकते । हाफ़िज़ इब्न ए जौज़ी रह. हाफ़िज़ ज़हबी रह. और अल्लामा शौकानी रह. ने इस रिवायत को मनघड़त कहा है ।

(مختصر غیر معتبر روایات کا فنی جائزہ صفحہ ۴۶)

25-दौरान ए नमाज़ हज़रत अली रज़ि. के बदन से तीर निकालने वाला मशहूर क़िस्सा बे असल है ।

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह. कहते हैं - ...... " एक और बे असल क़िस्सा मशहूर कर रखा है कि हज़रत अली रज़ि. के तीर लगा ,उस के निकलने में सख्त तकलीफ़ होती थी , आप रज़ि. (हज़रत अली) ने नमाज़ की नियत बांध ली ,तीर

निकाल लिया गया ,आप रज़ि. को खबर तक ना हुई ,इस क़िस्से की भी कोई असल नहीं .. खुदा मालूम कहाँ से गढ़ लेते हैं......!

(حکیم الامت کا من گھڑت روایات پر تعاقب صفحہ ۱۳۰ بحوالہ ملفوظات حکیم الامت . بد فہم لوگوں کی حالت جلد ۷ صفحہ ۳۴۰ . ادارہ تالیفات اشرفیہ. ملتان)

नमाज़ में तीर निकलने की ख़बर ना होना. एक दूसरे अंदाज़ में

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह. कहते हैं: -

...."और लोगों ने कमाल की मिसाल में ये मशहूर कर रखा है कि बाअज़ बुज़ुर्गों को नमाज़ में तीर निकलने तक की ख़बर नहीं हुई,अगर किसी को ये इत्तिला ना की जावे कि [पहले ज़िक्र करदा दोनों वाक़ये किस के हैं तो वो तीर की ख़बर ना होने वाले को कामिल समझेगा,हालाँकि ज़ाहिर है कि हुज़ूर ﷺ से बढ़कर कौन कामिल

हो सकता है,मगर फिर भी हुज़ूर ﷺ को बच्चों तक के रोने की ख़बर हुई ।

(حکیم الامت کا من گھڑت روایات پر تعاقب بحوالہ ملفوظات حکیم الامت : کام کی علامت ، ۸/۶۱، ادارہ تالیفات اشرفیہ، ملتان)